पलास्टिक का बनाया जाता है व उसके ऊपर एक विशेष प्रकार का पेन्ट कर दिया जाता है जिससे रडार द्वारा भेजी गयी सूक्ष्म तरगें या तो दूर हटा ली जाती है या अवशेषित कर ली जाती हैं। इस तकनीक से पृथ्वी पर स्थित रडारों को धोखा देने के साथ साथ आकाश में उड़ रहे आबाक्स विमानों को भी भ्रमित किया जा सकता है।

रडार रक्षा प्रणाली को शत्रु सीधे ही आक्रमण करके या तो ध्वस्त कर सकता है अथवा उसे जाम कर सकता है, अतः रडार के ट्रांसमीटर को युद्ध मैदान से बहुत दूर लगाया जाता है। जबकि रिसीवर शत्रु की सीमा पर लगाया जाता है। इस बाइस्टेरिक रडार का पता, जिसमें ट्रांसमीटर और रिसिवर दूर दूर होते हैं। शत्रु को मुश्किल से ही पता चल पाता है और रिसिवर सुरक्षित रहता है।

***

क्या आप जानते हैं ?

गुरूदीप सिंह दुआ
तकनीशियन

अविष्कार	वर्ष	अविष्कारक	देश
कार	1883	कार्ल बेन्ज	जर्मनी
एटम बम	1945	जेरावर्ट ओपेन हीमर	सं.रा.अमेरिका
एक्स-रे	1895	विलहेल्म के. रॉनजन	जर्मनी
थर्मामीटर	1593	गेलीलियो गलीली	इटली
बिजली का लैम्प	1879	थामस आलवा एडीसन	अमेरिका
वायुयान	1903	ओरिविल व विलबर राइट	अमेरिका
साईकिल	1839-40	किर्क पैट्रिक मैकमिलन	ब्रिटेन
सिनेमा	1895	निकालस व जीन लुहिपरी	अमेरिका
फाउटेन पैन	1884	लेकिस ई.वाटरमैन	अमेरिका
माचिस	1826	जौन वाकर	ब्रिटेन

*****